साहित्य अकादमीक वेबलाइन परिसंवाद मे साहित्यकार डॉ. प्रेमशंकर सिंह पर विमर्श

» डॉ. प्रेमशंकर सिंहक मातृभाषा मैथिली मे अमूल्य भाषिक योगदान रहल अछि : डॉ. उदय नारायण सिंह

सहरसा, समदिया

साहित्य अकादमी, नव दिल्ली द्वारा वेबलाइन शृंखलाक अंतर्गत मैथिलीक प्रतिष्ठित साहित्यकार आ प्राध्यापक रहल डॉ. प्रेमशंकर सिंहक व्यक्तित्व आ कृतित्व पर केन्द्रित एक दिवसीय परिसंवादक आयोजन कएल गेल। ज्ञातव्य अछि जे तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय मे मैथिली विभागाध्यक्षक रूप मे कार्यरत रहल डॉ. सिंहक योगदान मैथिली भाषा-शिक्षण क्षेत्र मे अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहल अछि। संगहि, ओ मैथिली साहित्यक विकास यात्रा मे सेहो अपना सक्रिय सहभागिता सऽ सराहनीय योगदान देने छथि। जूम माध्यम पर आयोजित एहि परिसंवादक उद्घाटन सत्र मे साहित्य अकादमीक उप सचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू स्वागत भाषण देलनि। तत्पश्चात अध्यक्षीय संबोधन मे मैथिली परामर्श मंडलक संयोजक आ प्रख्यात साहित्यकार डॉ. उदय नारायण सिंह डॉ. सिंहक भाषायी योगदान के स्मरण करैत एहि परिसंवादक सार्थकता पर प्रकाश देलनि। प्रथम सत्रक अध्यक्षता शिक्षाविद् डॉ. केष्कर ठाकुर कएलनि। एहि सत्र मे भागलपुर विश्वविद्यालयक पूर्व प्राध्यापक डॉ. शिव प्रसाद यादव डॉ. सिंहक प्राध्यापकीय आ साहित्यिक जीवनक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कएलनि। तदनंतर तिलकामांझी विश्वविद्यालयक वर्तमान मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद पाण्डेय तथा दरभंगा निवासी वरिष्ठ लेखक डॉ. योगानन्द झा विषय-केन्द्रित अपन-अपन आलेखक वाचन केलनि। एहि सत्रक अंतिम वक्ता रूप मे डॉ. सिंहक सुपुत्र प्रणव कुमार सिंह अपन पिता संग जुड़ल कतेको महत्वपूर्ण संस्मरण प्रस्तुत केलनि, जे सहभागी सभक हृदय के स्पर्श कएलक। दोसर सत्र मे साहित्यकार लक्ष्मण झा सागरक अध्यक्षता मे रोसड़ा महाविद्यालयक मैथिली विभाग मे कार्यरत डॉ. प्रवीण कुमार प्रभंजन डॉ. सिंहक नाट्यालोचना पर आधारित आलेखक पाठ केलनि। संगहि, स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसा मे कार्यरत डॉ. अरुण कुमार सिंह द्वारा डॉ. सिंहक आलोचना साहित्य पर विस्तृत विमर्श प्रस्तुत कएल गेल। रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीक डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा विवेच्य व्यक्तित्वक शोध-दृष्टि पर केन्द्रित अपन आलेख पाठ केलनि। कोलकातासं जुड़ल लक्ष्मण झा सागर अध्यक्षीय वक्तव्य मे डॉ. सिंह सं जुड़ल महत्वपूर्ण संस्मरण आ हुनक बहुआयामी योगदान पर गहन चर्चा केलनि। परिसंवादक समापन डॉ. नचिकेताक समापन भाषण आ डॉ. एन. सुरेश बाबूक औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन सं संपन्न भेल। एहि आयोजनक विशेषता इ रहल जे एहि मे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र सं वक्तासभक सक्रिय सहभागिता रहल, जे मैथिली भाषा-साहित्य लेल सकारात्मक प्रयास मानल जा रहल अछि। वेबिनारक क्रम मे तिलकामांझी विश्वविद्यालयक डॉ. अमिताभ चक्रवर्ती, डॉ. श्वेता भारती, मधेपुराक डॉ. उपेन्द्र प्रसाद यादव, डॉ. संजय वशिष्ठ, सुपौल सं साहित्यकार केदार कानन, मैथिली परामर्श मंडलक सदस्य डॉ. सुभाष चन्द्र याव, कथाकार-समीक्षक आशीष चमन, सहरसा सं किसलय कृष्ण, सत्यप्रकाश झा, सलीम सहगल, आ समस्तीपुर सं डॉ. भास्कर ज्योति आदि विद्वान सभ साहित्य अकादमीक एहि सार्थक आयोजनक भूरि-भूरि प्रशंसा कएलनि।